

# अध्याय ~22

## छन्द

छन्द काव्य सौन्दर्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। छन्द में मात्राओं और वर्णों की विशेष व्यवस्था तथा संगीतात्मक लय और गति की योजना रहती है। हिन्दी में विशेषतः काव्य में छन्दों का बहुत महत्व है।



### छन्द से तात्पर्य

- छन्द शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की छद् धातु से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है प्रसन्न अर्थात् आह्लादित करना। जब वर्णों या मात्राओं की नियमित संख्या के विन्यास से किसी काव्य में प्रसन्नता उत्पन्न होती है, तो उसे छन्द कहते हैं। अन्य शब्दों में, निश्चित चरण, वर्ण, मात्रा, क्रम, यति, गति, तुक और गण आदि के द्वारा नियोजित रचना को छन्द कहते हैं।
- छन्द को पिंगल नाम से भी जाना जाता है। इसका सर्वप्रथम विवरण ऋग्वेद से प्राप्त होता है। हिन्दी साहित्य में छन्दशास्त्र की दृष्टि से प्रथम कृति 'छन्दमाला' है। जिस प्रकार व्याकरण गद्य का महत्वपूर्ण भाग है उसी प्रकार छन्दशास्त्र पद्य का महत्वपूर्ण भाग है।

### छन्द के भाग (अंग)

छन्द के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं

- चरण
- वर्ण
- मात्रा
- संख्या एवं क्रम
- यति (विराम)
- गति
- तुक
- गण

### चरण

- छन्द पंक्तियों का समूह होता है जिसके 4 भाग होते हैं और प्रत्येक पंक्ति में समान वर्ण या मात्राएँ होती हैं। इन्हीं पंक्तियों को चरण या पाद या पद कहते हैं।
- चरण मुख्यतः दो प्रकार **सम** एवं **विषम** चरण होते हैं। छन्द के प्रथम-तृतीय चरण को **विषम** तथा दूसरे-चौथे चरण को **सम** कहते हैं।
- हिन्दी में कुछ छन्दों में चरण चार होते हैं; परन्तु उन्हें लिखा दो ही पंक्तियों में जाता है; जैसे—सोरठा, दोहा आदि। इस प्रकार के छन्द की प्रत्येक पंक्ति को 'दल' कहा जाता है।
- कुछ छन्दों को 6 पंक्तियों में लिखा जाता है। इस प्रकार के छन्द दो प्रकार के छन्दों से बनते हैं; जैसे—कुण्डलिया छन्द (दोहा + रोला), छप्पय (रोला + उल्लाला आदि)।

लघु वर्ण, दीर्घ वर्ण व मात्राओं को दिए गए उदाहरण की सहायता से समझा जा सकता है

उदाहरण: मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय। में वर्णों और मात्राओं की गणना करें।

1	2	= 2 वर्ण	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	= 15 वर्ण
मे	री		मे	री	भा	व	बा	धा	ह	रौ	रा	धा	ना	रा	रि	सो	य	
ए	ई		ए	ई	अ	अ	आ	आ	अ	औ	आ	आ	आ	अ	इ	ओ	अ	
S	S		S	S	I	I	S	S	I	S	S	S	S	I	I	S	I	
2	2	= 4 मात्रा	2	2	1	1	2	2	1	2	2	2	2	1	1	2	1	= 24 मात्राएँ

### वर्ण

किसी भी एक स्वर वाली ध्वनि को **वर्ण** कहते हैं। वर्ण (अक्षर) ध्वनि की मूल इकाई है। जिन ध्वनियों में स्वर नहीं होता उन्हें वर्ण नहीं माना जाता। उदाहरण के लिए; हलन्त वाले शब्द; जैसे—अहम् का 'म्' वर्ण नहीं माना जाता, संयुक्ताक्षर वाले शब्द का पहला अक्षर जैसे—सत्य का 'त' वर्ण नहीं माना जाता। वर्ण दो प्रकार के होते हैं

### लघु (ह्रस्व) वर्ण

जिन वर्णों के उच्चारण में एक मात्रा काल का समय लगता है, उन्हें लघु (ह्रस्व) वर्ण कहते हैं। लघु वर्ण के लिए । (एक पाई रेखा) चिह्न प्रयुक्त किया जाता है। लघु वर्ण में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है

- अ, इ, उ, ऋ, कि, नु, पृ।
- संयुक्ताक्षर वाले वर्ण; जैसे—सत्य (यहाँ त्य-संयुक्त व्यंजन है)
- चन्द्रबिन्दु (◌ँ) वाले वर्ण; जैसे—हँसना, चाँदनी आदि।
- हलन्त (◌्) वाले वर्ण; जैसे—सुखद्, अहम्, अर्थात् आदि।

नोट: दो लघु वर्ण मिलकर एक गुरु के बराबर माने जाते हैं।

### दीर्घ (गुरु) वर्ण

जिन वर्णों में लघु वर्णों की अपेक्षा बोलने में अधिक समय अर्थात् दो मात्रा का समय लगता है, उन्हें दीर्घ (गुरु) वर्ण कहते हैं। दीर्घ वर्ण के लिए S (एक वर्तुल रेखा) चिह्न प्रयुक्त किया जाता है। दीर्घ वर्ण में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है

- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, की, कू।
- अनुस्वार (◌ं) वाले वर्ण; जैसे—अंग, भंग आदि।
- विसर्ग (◌ः) वाले वर्ण; जैसे—छः, अधः आदि।
- संयुक्ताक्षर का पूर्ववर्ती वर्ण; जैसे—अष्टम का 'अ' दीर्घ वर्ण माना जाता है।
- हलन्त वाले शब्द; जैसे—सुखद् में हलन्त वाले वर्ण के पहले का वर्ण 'ख' दीर्घ वर्ण माना जाता है।

## छन्द

## मात्रा

- वर्णों के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे 'मात्रा' कहते हैं।
- लघु वर्णों की मात्रा **एक** और गुरु वर्णों की मात्राएँ **दो** होती हैं।
- इस तरह मात्राएँ दो प्रकार की होती हैं
  - लघु (ह्रस्व) (1)**— अ, इ, उ, ऋ (एक मात्रा)
  - दीर्घ (गुरु) (5)**— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (दो मात्रा)

## संख्या एवं क्रम

- वर्ण या मात्रा की व्यवस्था को 'क्रम' कहते हैं अर्थात् गुरु और लघु के सही स्थान निर्धारण को क्रम कहते हैं।
- वर्णों एवं मात्राओं की गणना को संख्या कहते हैं।

## यति (विराम)

- छन्दों को पढ़ते समय बीच-बीच में कुछ रुकना पड़ता है। इन्हीं विराम स्थलों को 'यति' कहते हैं। सामान्यतः छन्द के चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण के अन्त में 'यति' होती है।
- छोटे छन्दों में यति चरण के अन्त में होती है, जबकि बड़े छन्दों में एक ही चरण में एक से अधिक यति होती है।
- यति को विभिन्न चिह्नों; जैसे—(.), (I), (II), (?) आदि द्वारा दर्शाया जाता है।

## गति

- 'गति' का अर्थ 'लय' है। छन्दों को पढ़ते समय मात्राओं के लघु अथवा दीर्घ होने के कारण जो विशेष प्रवाह उत्पन्न होता है, उसे ही 'गति' (लय) कहते हैं।
- मात्राओं की संख्या, लघु तथा गुरु का गति में विशेष महत्त्व होता है। मात्राओं की संख्याओं में उतार-चढ़ाव से गति में अवरोध उत्पन्न होता है।

## तुक

- छन्द के प्रत्येक चरण के अन्त में स्वर-व्यंजन की समानता को 'तुक' कहते हैं।
- जिस छन्द में तुक नहीं मिलता है, उसे **अतुकान्त** और जिसमें तुक मिलता है, उसे **तुकान्त** छन्द कहते हैं।

## गण

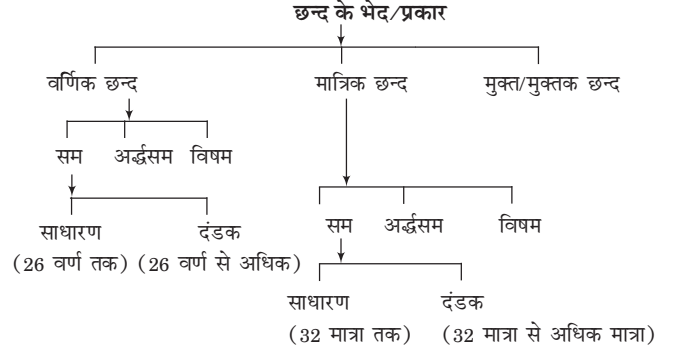
- तीन वर्णों के समूह को 'गण' कहते हैं। गणों की संख्या 8 है—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण।
- इन गणों के नाम रूप **यमाताराजभानसलगा** सूत्र द्वारा सरलता से ज्ञात हो जाते हैं।
- सूत्र में पहले आठ वर्णों से गण का तथा अन्तिम वर्ण (ल-लघु, गा-गुरु) से मात्रा का ज्ञान होता है। गणों के नाम, सूत्र, चिह्न और उदाहरण इस प्रकार हैं

गण	सूत्र	चिह्न	उदाहरण
यगण	यमाता	।५५	बहाना
मगण	मातारा	५५५	आज़ादी
तगण	ताराज	५५।	बाज़ार
रगण	राजभा	५।५	नीरजा
जगण	जभान	।५।	महेश
भगण	भानस	५।।	मानस
नगण	नसल	।।।	कमल
सगण	सलगा	।।५	ममता

## छन्द के प्रकार

छन्द तीन प्रकार के होते हैं—

- (1) वर्णिक (2) मात्रिक (3) मुक्तक या स्वच्छन्द।



## 1. वर्णिक छन्द

जिन छन्दों की रचना वर्णों की गणना के आधार पर की जाती है और लघु-गुरु का क्रम समान होता है, उन्हें वर्णिक छन्द कहते हैं। वर्णिक छन्दों के सभी चरणों में वर्णों व मात्राओं की संख्या समान रहती है। वर्णिक छन्द के मुख्य उदाहरण निम्न हैं

वर्ण संख्या	वर्णिक छन्द	वर्ण संख्या	वर्णिक छन्द
8 वर्ण	प्रमाणिका	19 वर्ण	स्रग्धरा
11 वर्ण	स्वागता, भुजंगी, शालिनी, इन्द्रवज्रा, दोधक	21 वर्ण	शार्दूलविक्रीडित
12 वर्ण	वंशस्थ, भुजंगप्रयात, द्रुतविलम्बित, त्रोटक	22-26 वर्ण	सवैया
14 वर्ण	वसन्ततिलका	31 वर्ण	घनाक्षरी
15 वर्ण	मालिनी	32 वर्ण	देवघनाक्षरी
16 वर्ण	पंचचामर, चंचला	31-33 वर्ण	कवित्त/मनहरण
17 वर्ण	मन्दाक्रान्ता, शिखरिणा		

यहाँ इन्द्रवज्रा व मालिनी छन्द को वर्णों की गणना के आधार पर उदाहरण सहित समझाया गया है

## इन्द्रवज्रा

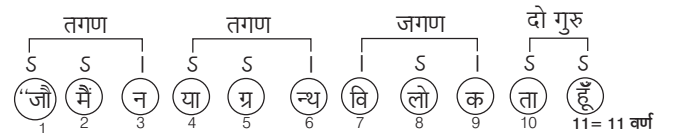
इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, पाँचवें या छठे वर्ण पर यति होती है। इसमें दो तगण (५५।, ५५।), एक जगण (।५।) तथा अन्त में दो गुरु (५५) होते हैं; जैसे—

५ ५ । ५ ५ । । ५ । ५ ५  
“जो मैं नया ग्रन्थ, विलोकता हूँ, —प्रथम चरण

५ ५ । ५ ५ । । ५ । ५ ५  
भाता मुझे सो, नव मित्र सा है । —द्वितीय चरण

५ ५ । ५ ५ । । ५ । ५ ५  
देखूँ उसे मैं, नित सार वाला, —तृतीय चरण

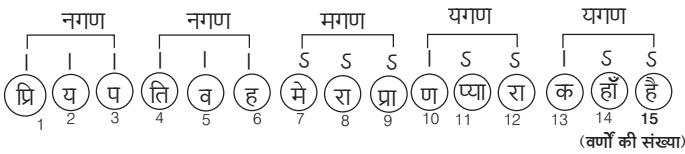
५ ५ । ५ ५ । । ५ । ५ ५  
मानो मिला मित्र, मुझे पुराना ।” —चतुर्थ चरण



## मालिनी

इस छन्द में 15 वर्ण होते हैं तथा आठवें व सातवें वर्ण पर यति होती है। इसके प्रत्येक चरण में दो नगण (III, III), एक मगण (SSS) तथा दो यगण (ISS, ISS) होते हैं अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में न, न, म, य, य गण होते हैं, वहाँ मालिनी छन्द होता है; जैसे—

II III III SSS SI SSS ISS S  
 “प्रिय पति वह मेरा, प्राण प्यारा कहाँ है?  
 II III III ISS S SSS ISS S  
 दुःख जलधि निमग्ना का सहारा कहाँ है?  
 II III III SSS SI SSS ISS S  
 अब तक जिसको मैं, देख के जी सकी हूँ;  
 II III III ISS S SSS ISS S  
 वह हृदय हमारा, नेत्र-तारा कहाँ है?”



## 2. मात्रिक छन्द

यह छन्द मात्रा की गणना पर आश्रित रहता है, इसलिए इसका नामक मात्रिक छन्द है। जिन छन्दों में मात्राओं की समानता के नियम का पालन किया जाता है किन्तु वर्णों की समानता पर ध्यान नहीं दिया जाता, उन्हें मात्रिक छन्द कहा जाता है। इन छन्दों में गति का महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि इसमें लघु व गुरु वर्ण का स्थान निश्चित नहीं होता।

## मात्रिक छन्द के भेद

1. **सम** छन्द के चार चरण होते हैं और चारों की मात्राएँ या वर्ण समान ही होते हैं; जैसे—चौपाई, इन्द्रवज्रा आदि
2. **अर्द्धसम** छन्द के पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे चरणों की मात्राओं या वर्णों में परस्पर समानता होती है; जैसे—दोहा, सोरठा आदि।
3. **विषम** नाम से ही स्पष्ट है। इसमें चार से अधिक, छः चरण होते हैं और वे एक समान (वजन के) नहीं होते; जैसे—कुण्डलियाँ, छप्पय आदि।

प्रमुख मात्रिक छन्द के उदाहरण निम्न हैं

- **सम मात्रिक छन्द** इस छन्द के उदाहरण अहीर (11 मात्रा), तोमर (12 मात्रा), मानव (14 मात्रा), अरिल्ल, पद्धरि/पद्धटिका, चौपाई (सभी 16 मात्रा), पीयूषवर्ष, सुमेरु (दोनों 19 मात्रा), राधिका (22 मात्रा), रोला, दिक्पाल, रूपमाला (सभी 24 मात्रा), गीतिका (26 मात्रा), सरसी (27 मात्रा), सार (28 मात्रा), हरिगीतिका (28 मात्रा), ताटक (30 मात्रा), वीर या आल्हा (31 मात्रा) आदि छन्द हैं।
- **अर्द्धसम मात्रिक छन्द** इस छन्द के उदाहरण बरवै (विषम चरण में 12 मात्रा, सम चरण में 7 मात्रा), दोहा (विषम 13, सम 11), सोरठा (दोहा का उल्टा), उल्लाला (विषम 15, सम 13) आदि छन्द हैं।
- **विषम मात्रिक छन्द** इस छन्द के उदाहरण कुण्डलिया (दोहा + रोला), छप्पय (रोला + उल्लाला) आदि छन्द हैं।

## चौपाई

यह **सम मात्रिक छन्द** है, इसमें चार चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में दो गुरु होते हैं;

जैसे—

SI II II II III ISS —16 मात्राएँ  
 “बंदउँ गुरु पद पदुम परागा,  
 III ISS I III ISS —प्रथम (विषम) चरण  
 सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ।  
 III S III S II SS —16 मात्राएँ  
 अमिय मूरिमय चूरन चारू,  
 III III III ISS —द्वितीय (सम) चरण  
 समन सकल भवरुज परिवार ॥” —16 मात्राएँ  
 —चतुर्थ (सम) चरण

## रोला (काव्यछन्द)

यह चार चरण वाला **सम मात्रिक** छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं तथा 11 व 13 मात्राओं पर ‘यति’ होती है। इसके चारों चरणों की ग्यारहवीं मात्रा लघु रहने पर इसे **काव्यछन्द** भी कहते हैं; जैसे—

SS II II SI III II II ISS II S —24 मात्राएँ  
 नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुंदर है। —प्रथम चरण  
 SI SI III III SI SS S II S —24 मात्राएँ  
 सूर्य-चन्द्र युग-मुकुट, मेरुला रत्नाकार है॥ —द्वितीय चरण  
 II S SI SI SI SS S II S —24 मात्राएँ  
 नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारा-मंडल हैं। —तृतीय चरण  
 S SI II II SI S III SS II S —24 मात्राएँ  
 बंदीजन खगवृन्द, शेष-फन सिंहासन है। —चतुर्थ चरण

## हरिगीतिका

यह चार चरण वाला **सम मात्रिक** छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं, अन्त में लघु और गुरु होता है तथा 16 व 12 मात्राओं पर यति होती है; जैसे—

II SI S II III S II III S II S IS —28 मात्राएँ  
 “मन जाहि रौचउ मिलहि सोवर, सहज सुन्दर सौवरो। —प्रथम चरण  
 II S IS I SI SI IS I SI S IS —28 मात्राएँ  
 करुना निधान सुजान सीलु, सनेह जानत रावरो॥ —द्वितीय चरण  
 II SI SI S II III II III II III IS —28 मात्राएँ  
 इहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय, सहित हिय हरषित अली। —तृतीय चरण  
 II S IS II SI II II III II S II IS —28 मात्राएँ  
 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि, पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥” —चतुर्थ चरण

## गीतिका

यह **सम मात्रिक** छन्द है। गीतिका में 26 मात्राएँ होती हैं, 14 व 12 मात्राओं पर यति होती है। चरण के अन्त में लघु-गुरु होना आवश्यक है; जैसे—

SI SS S ISS S IS II S IS —26 मात्राएँ  
 “साधु-भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे। —(प्रथम चरण)  
 SI S S S IS S S S IS II S IS —26 मात्राएँ  
 सभ्यता की सीढ़ियों पै, सूरमा बढ़ने लगे ॥ —(द्वितीय चरण)  
 SI S S S IS S SI S II S IS —26 मात्राएँ  
 वेद-मन्त्रों को विवेकी, प्रेम से पढ़ने लगे। —(तृतीय चरण)  
 SI S S S IS S S SI S II S IS —26 मात्राएँ  
 वंचकों की छातियों में शूल-से गड़ने लगे॥” —(चतुर्थ चरण)

## वीर (आल्हा)

यह भी **सम मात्रिक छन्द** है। वीर छन्द के प्रत्येक चरण में 16 व 15 मात्राओं पर यति देकर 31 मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में गुरु-लघु होना आवश्यक है; जैसे—

IIII S SSI III II	—16 मात्राएँ
“हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,	
SI IS S SII SI	—15 मात्राएँ
बैठ शिला की शीतल छाँह।	—प्रथम चरण
II ISI SS IIS S	—16 मात्राएँ
एक पुरुष भीगे नयनों से,	
II IS S III SI	—15 मात्राएँ
देख रहा था प्रलय-प्रवाह II”	—द्वितीय चरण

## दोहा

यह **अर्द्धसम मात्रिक छन्द** है। इसमें 24 मात्राएँ होती हैं। इसके विषम चरण (प्रथम व तृतीय) में 13-13 तथा सम चरण (द्वितीय व चतुर्थ) में 11-11 मात्राएँ होती हैं; जैसे—

SS II SS IS	—13 मात्राएँ
“मेरी भव बाधा हरी,	—प्रथम चरण
SS SII SI	—11 मात्राएँ
राधा नागरि सोय।	—द्वितीय चरण
S II S SS IS	—13 मात्राएँ
जा तन की झाँई परे,	—तृतीय चरण
SI III II SI	—11 मात्राएँ
स्याम हरित दुति होय॥”	—चतुर्थ चरण

## सोरठा

यह भी **अर्द्धसम मात्रिक छन्द** है। यह दोहा का विलोम है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके प्रथम व तृतीय चरण में 11-11 और द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। इसमें कुल मात्राएँ 24 होती हैं; जैसे—

II SII S SI	—11 मात्राएँ
“सुनि केवट के बैन,	—प्रथम चरण
SI ISS IIIS	—13 मात्राएँ
प्रेम लपेटे अटपटे।	—द्वितीय चरण
IIS IIS SI	—11 मात्राएँ
बिहँसे करुना ऐन,	—तृतीय चरण
III SIS III II	—13 मात्राएँ
चितइ जानकी लखन तन॥”	—चतुर्थ चरण

## उल्लाला

यह भी **अर्द्धसम मात्रिक छन्द** है। इसके प्रथम और तृतीय चरण में 15-15 मात्राएँ होती हैं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं; जैसे—

S IIISIS SI S	—15 मात्राएँ
हे शरणदायिनी देवि तू,	—प्रथम चरण
IIS IIS SI S	—13 मात्राएँ
करती सबका त्राण है।	—द्वितीय चरण
S SISI SSI II	—15 मात्राएँ
हे मातृभूमि! संतान हम,	—तृतीय चरण
S IIS S SI S	—13 मात्राएँ
तू जननी, तू प्राण है।	—चतुर्थ चरण

## बरवै

यह भी **अर्द्धसम मात्रिक छन्द** है। बरवै के प्रथम और तृतीय चरण में 12 तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 7 मात्राएँ होती हैं, इस प्रकार इसकी प्रत्येक पंक्ति में 19 मात्राएँ होती हैं; जैसे—

II S SI SI II	—12 मात्राएँ
“तुलसी राम नाम सम,	—प्रथम चरण
SI I SI	—7 मात्राएँ
मीत न आन।	—द्वितीय चरण
S IIS I SIII	—12 मात्राएँ
जो पहुँचाव रामपुर,	—तृतीय चरण
II IIS I	—7 मात्राएँ
तनु अवसान II”	—चतुर्थ चरण

## छप्पय (रोला + उल्लाला)

यह छः चरण वाला **विषम मात्रिक छन्द** है। इसके प्रथम चार चरण **रोला** के 24-24 मात्राएँ तथा अन्तिम दो चरण **उल्लाला** 26 या 28 मात्राओं के होते हैं। इसके प्रथम व तृतीय चरण में 15-15 व द्वितीय और चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। इसमें कुल मात्राएँ 28 होती हैं।

इसके प्रत्येक चरण का अन्तिम शब्द समान रहता है—

SSII IISI III III SII S	= 24 मात्राएँ
‘नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।	] रोला (प्रथम चार चरण)
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।	
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारा मण्डल है।	
बन्दी जन खगवृन्द शेष फन सिंहासन है।	
II S IISI ISI S IIS S II SI S	= 28 मात्राएँ
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेष की।	] उल्लाला (अन्तिम दो चरण)
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की ॥”	

## कुण्डलिया (दोहा + रोला)

यह छः चरण वाला **विषम मात्रिक छन्द** है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। इसके प्रथम दो चरण **दोहा** और अन्तिम चार चरण **रोला** के होते हैं। ये दोनों छन्द कुण्डली के रूप में एक दूसरे से गुंथे रहते हैं, इसीलिए इन्हें कुण्डलिया छन्द कहते हैं; इसकी मुख्य पहचान यह है कि जिस शब्द से यह प्रारम्भ होती है, समाप्त भी उसी शब्द से होती है। जैसे—

IISSSSSISSSS SII SI	= 24 मात्राएँ
“पहले दो दोहा रहें, रोला अन्तिम चार।	] दोहा (प्रथम दो चरण)
रहें जहाँ चौबीस कला, कुण्डलिया का सार।	
S IIS S SI III S IS IS S	
कुण्डलिया का सार, चरण छः जहाँ बिराजे।	] रोला (अन्तिम चार चरण)
दोहा अन्तिम पाद, सुरोला आदिहि छाजे।	
पर सबही के अन्त शब्द वह ही दुहराले।	
दोहा का प्रारम्भ, हुआ हो जिससे पहले।”	

## 3. मुक्त/मुक्तक छन्द

मुक्त छन्द को आधुनिक युग की देन माना जाता है। चरणों की अनियमितता, असमानता तथा भावों के अनुकूल यति विधान ही मुक्त छन्द की विशेषता होती है। इसमें वर्णों और मात्राओं की गिनती नहीं होती है। मुक्तक छन्द को स्वच्छन्द भी कहा जाता है।

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. हिन्दी साहित्य में छन्दशास्त्र की दृष्टि से पहली कृति कौन-सी है?  
(a) छन्दमाला (b) छन्दसार  
(c) छन्दोर्णव पिंगल (d) छन्दविचार
2. छन्द को पढ़ते समय आने वाले विराम को क्या कहते हैं?  
(a) गति (b) यति (c) तुक (d) गण  
(UPSSSC VDO 2016)
3. गणों की सही संख्या है  
(a) छः (b) आठ (c) दस (d) बारह
4. दोहा और सोरठा किस प्रकार के छन्द हैं?  
(a) समवर्णिक (b) सममात्रिक (c) अर्द्धसममात्रिक (d) विषम मात्रिक
5. दोहा और रोला के संयोग से बनने वाला छन्द है (PGT परीक्षा 2011)  
(a) पीयूष वर्ष (b) टोटक (c) छप्पय (d) कुण्डलिया
6. “बन्दुर्गुरुपद कंज कृपा सिन्धु नररूप हरि।  
महामोहतम पुंज, जासु वचन रविकर निकर।।”  
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है (TGT परीक्षा 2011)  
(a) सोरठा (b) दोहा (c) बरवै (d) रोला
7. “कहते हुए यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।  
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।”  
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है  
(a) बरवै (b) चौपाई (c) गीतिका (d) सोरठा
8. “सेस महेश गणेश सुरेश, दिनेसहु जाहि निरन्तर गावैं।  
नारद से सुक व्यास रटैं, पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।।”  
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है  
(a) मालती (b) वंशस्थ (c) शिखरिणी (d) मन्दाक्रान्ता
9. शिल्पगत आधार पर दोहे का उल्टा छन्द है  
(a) रोला (b) चौपाई (c) सोरठा (d) बरवै
10. वसन्ततिलका के प्रत्येक चरण में वर्ण होते हैं  
(a) 11 (b) 13 (c) 15 (d) 14
11. चार चरणों में समान मात्राओं वाले छन्द को क्या कहते हैं?  
(a) सम मात्रिक छन्द (b) विषम मात्रिक छन्द  
(c) अर्द्धसम मात्रिक छन्द (d) ये सभी
12. दोहा छन्द में कितने चरण होते हैं? (UP पुलिस कांस्टेबल परीक्षा 2018)  
(a) दो (b) छह (c) तीन (d) चार
13. लौकिक संस्कृत के छन्दों का जन्मदाता किसे माना गया है?  
(a) भरतमुनि (b) केशव (c) अभिनव गुप्त (d) वाल्मीकि
14. चौपाई छन्द की विशेषताएँ हैं  
1. दोनों चरणों में 16-16 मात्राएँ 2. पहले-दूसरे चरण में 15-16 मात्राएँ  
3. चरण के अन्त में दो गुरु वर्ण 4. अन्तिम चरण में एक गुरु वर्ण  
उपर्युक्त में से सही कथन है  
(a) 1 व 2 (b) 1 व 4 (c) 1 व 3 (d) 3 व 4
15. छन्द कितने प्रकार के होते हैं?  
(a) चार (b) तीन (c) पाँच (d) दो
16. कोई भी छन्द विभक्त रहता है  
(a) यति में (b) चरणों में  
(c) 'a' और 'b' दोनों (d) इनमें से कोई नहीं
17. निम्न पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?  
“झिल्ली झनकाएँ पिक, चातक पुकारैं बन।  
मोरिन गुटाएँ उठै, जुगनु चमकि चमकि।।”  
(a) मालिनी (b) घनाक्षरी (c) गीतिका (d) मन्दाक्रान्ता
18. निम्नलिखित में सम मात्रिक छन्द है  
(a) सोरठा (b) दोहा (c) चौपाई (d) ये सभी
19. “मूक होई वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।  
जासु कृपा सो दयाल, द्रवहूँ सकल कलिगाल दहन।।”  
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?  
(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)  
(a) दोहा (b) सोरठा (c) सवैया (d) चौपाई
20. “तीन बरस तक कुत्ता जीवे, सौ तेरह तक जीवै सियार।  
बरस अठारह छत्री जीवे, आगे जीवन को धिक्कार।।”  
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)  
(a) सवैया (b) आल्हा (c) छप्पय (d) घनाक्षरी
21. सही विकल्प बताइए  
‘छन्द’ शब्द का मुख्य अर्थ ‘बन्धन’ है। .....  
आदि नियमों पर आधारित काव्य-रचना को छन्द कहा जाता है।  
(मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)  
(a) गति, तुक, छात्र, विराम (b) गति, तुक, मात्रा, विराम  
(c) गति, तुक, मात्रा, विश्राम (d) गीत, तुक, मात्रा, विराम
22. निम्नलिखित में से कौन-सा छन्द प्रकार नहीं है?  
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)  
(a) चौपाई (b) दोहा (c) सोरठा (d) दृष्टान्त
23. ‘चौपाई’ छन्द के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?  
(UKSSSC VDO 2015)  
(a) 15 (b) 18 (c) 14 (d) 16
24. ‘साधु-भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे’ में छन्द है  
(इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2019)  
(a) बरवै (b) सोरठा (c) गीतिका (d) छप्पय
25. दोहा छन्द के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?  
(छत्तीसगढ़ पटवारी भर्ती परीक्षा 2019)  
(a) क्रमशः 13, 11, 13, 11 (b) क्रमशः 13, 13, 11, 11  
(c) क्रमशः 11, 13, 11, 13 (d) क्रमशः 11, 11, 13, 13
26. रोला के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?  
(a) 14 (b) 21 (c) 24 (d) 34
27. निम्नांकित पद्य किस छन्द में है?  
“नवल सुन्दर श्याम शरीर की  
सजल नीरद सी कल कान्ति थी।।”  
(UPTET 2017)  
(a) मालिनी (b) इन्द्रवज्रा  
(c) द्रुतविलम्बित (d) शालिनी

28. “श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।  
बरनौ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार॥”  
में छन्द है (UPTET 2016, 14)  
(a) दोहा (b) सोरठा (c) रोला (d) बरवै
29. ‘सुनु सिय सत्य असीस हमारी।  
पूजहिं मन कामना तुम्हारी॥’  
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)  
(a) बरवै (b) सोरठा (c) दोहा (d) चौपाई
30. “रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।  
पानी गए न उबरे, मोती मानुष चूना॥”  
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है (DSSSB 2015)  
(a) सोरठा (b) दोहा (c) चौपाई (d) बरवै
31. छन्द में प्रयुक्त अक्षर को क्या कहा जाता है?  
(UP पुलिस कांस्टेबल परीक्षा 2018)  
(a) व्यंजन (b) चरण (c) मात्रा (d) वर्ण
32. छन्दशास्त्र में वर्ण हैं  
(a) तीन प्रकार के (b) दो प्रकार के  
(c) चार प्रकार के (d) इनमें से कोई नहीं
33. शिखरिणी छन्द है  
(a) वार्षिक (b) अर्द्ध मात्रिक (c) सम मात्रिक (d) विषम मात्रिक
34. अर्द्धसम मात्रिक जाति का छन्द है  
(a) रोला (b) दोहा (c) चौपाई (d) कुण्डलिया
35. “अवधि शिला का उर पर था गुरु भार।  
तिल-तिल काट रही थी दृग जल धार॥”  
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है  
(a) दोहा (b) सोरठा (c) रोला (d) बरवै
36. “हम जो कुछ देख रहें हैं, सुन्दर है सत्य नहीं है।  
यह दृश्य जगत भासित है, बिन कर्म शिवत्व नहीं है।”  
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?  
(a) 14-14 मात्राओं की यति से 28 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द  
(b) 10-10 वर्णों की यति से 20 वर्णों वाला वार्षिक छन्द  
(c) 13-13 मात्राओं की यति से 26 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द  
(d) 15-15 मात्राओं की यति से 30 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द
37. वीर या आल्हा किस जाति का छन्द है?  
(a) वार्षिक (b) मात्रिक  
(c) अर्द्धसम मात्रिक (d) सममात्रिक
38. मन्दाक्रान्ता छन्द है  
(a) मात्रिक (b) सम मात्रिक  
(c) वार्षिक (d) इनमें से कोई नहीं
39. चार चरण वाला सममात्रिक छन्द जिसमें 28 मात्राएँ होती हैं, वह है  
(a) सोरठा (b) कुण्डलिया (c) हरिगीतिका (d) रोला
40. जिस छन्द में चार चरण और प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं, वह कहलाता है (UPSSSC VDO 2015)  
(a) दोहा (b) सोरठा (c) रोला (d) चौपाई
41. निम्न में सम मात्रिक छन्द का कौन-सा उदाहरण है?  
(जूनियर इंजीनियर/तकनीकी परीक्षा 2016)  
(a) दोहा (b) सोरठा (c) चौपाई (d) ये सभी
42. निम्न पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?  
“शशि से सखियाँ विनती करती,  
टुक मंगल हो विनती करती।  
हरि के पद-पंकज देखन दै,  
पदि मोटक माहिं निहारन दै॥”  
(a) त्रोटक छन्द (b) भुजंगी छन्द (c) रोला छन्द (d) छप्पय छन्द
43. किस छन्द में 26 मात्राएँ होती हैं तथा 14-12 पर यति होती है?  
(UPSSSC VDO 2016)  
(a) वीर (b) सोरठा (c) गीतिका (d) छप्पय
44. छप्पय किस प्रकार का छन्द है?  
(UPSSSC कम्बाईड मेडिकल सर्विसेज कम्प्यूटिव परीक्षा 2015)  
(a) सम (b) विषम  
(c) अर्द्धसम (d) इनमें से कोई नहीं
45. लालदेह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।  
ब्रज देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥  
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?  
(a) सोरठा (b) चौपाई (c) दोहा (d) बरवै
46. बिना बिचारे जब काम होगा, कभी न अच्छा परिणाम होगा। प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?  
(a) सोरठा (b) मालिनी (c) दोहा (d) उपेन्द्रवज्रा
47. ‘छन्दशास्त्र के आदि प्रणेता थे  
(UPSSSC सम्मिलित सहायक लेखाकार परीक्षा 2016)  
(a) बिहारी (b) वाल्मीकि ऋषि (c) पिंगल ऋषि (d) केशवदास
48. छन्द से सम्बन्धित गणों की सही संख्या है  
(UPSSSC आबकारी सिपाही परीक्षा 2016)  
(a) छः (b) सात (c) आठ (d) दस
49. अपभ्रंश काव्य का सुप्रसिद्ध छन्द कौन-सा है?  
(a) कडवक (b) पद्धरि (c) रास (d) इहा
50. वह सम मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ हों तथा प्रत्येक चरण में 11वीं एवं 13वीं मात्रा पर यति होती हो, कौन-सा छन्द कहा जायेगा?  
(a) रोला (b) सोरठा (c) सवैया (d) कवित

## उत्तरमाला

1. (a)	2. (b)	3. (b)	4. (c)	5. (d)	6. (a)	7. (c)	8. (a)	9. (c)	10. (d)
11. (a)	12. (d)	13. (d)	14. (c)	15. (b)	16. (c)	17. (b)	18. (c)	19. (b)	20. (b)
21. (b)	22. (d)	23. (d)	24. (c)	25. (a)	26. (c)	27. (c)	28. (a)	29. (d)	30. (b)
31. (d)	32. (b)	33. (a)	34. (b)	35. (d)	36. (a)	37. (d)	38. (c)	39. (c)	40. (d)
41. (c)	42. (a)	43. (c)	44. (b)	45. (c)	46. (d)	47. (c)	48. (c)	49. (a)	50. (a)